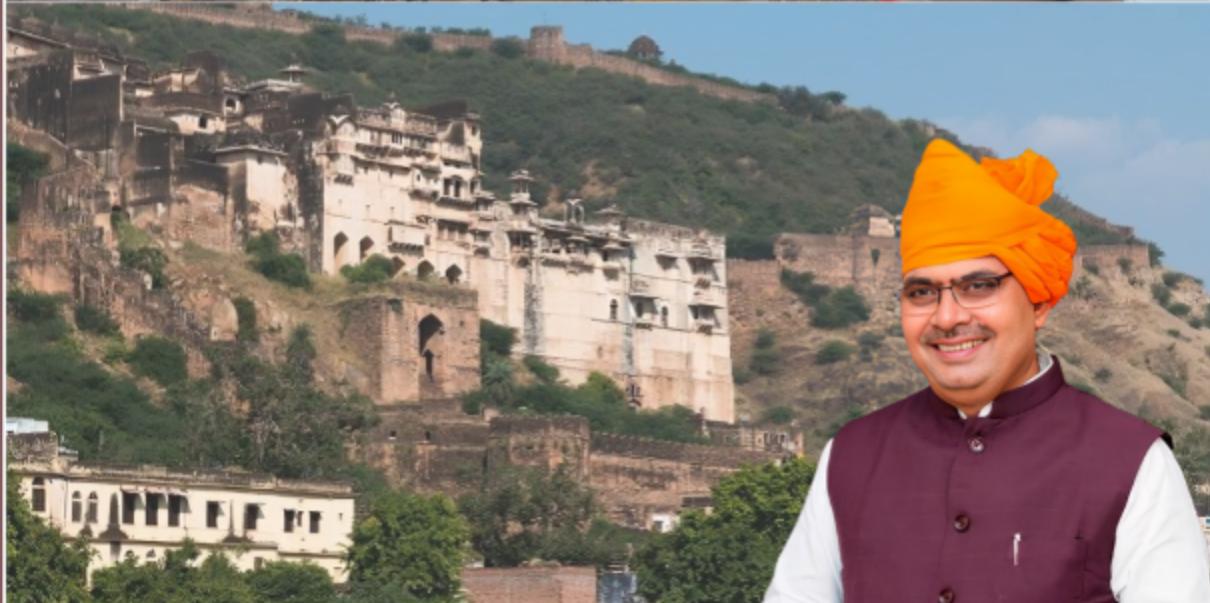




Government of Rajasthan



# पंच गौरव जिला पुस्तिका सिरोही





मुख्यमंत्री  
राजस्थान

## संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

  
(भजन लाल शर्मा)

प्रकाशन से जुड़े अधिकारी / कर्मचारी

**श्रीमती अल्पा चौधरी**

जिला कलक्टर एवं  
अध्यक्ष पंच गौरव कार्यक्रम, सिरोही

**श्री दिनेश राय सापेला**

अतिरिक्त जिला कलक्टर, सिरोही

**श्री सियाराम मीना**

उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग एवं  
सदस्य सचिव, पंच गौरव सिरोही

**राजेन्द्र यादव**

सांख्यिकी निरीक्षक

## विषय—सूची

क्र.सं.	विषय	पेज संख्या
1.	प्रस्तावना	4
2.	कार्यक्रम के उद्देश्य	5
3.	कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना	6
	अ—नोडल विभाग	6
	ब—समन्वय	7
4.	पंच गौरव समिति सिरोही	8
5.	जिला स्तरीय समिति के कार्य	8
6.	पंच गौरव सिरोही	9
7.	एक जिला एक उपज—सौफ	10—16
8.	एक जिला एक वनस्पति प्रजाति—महुआ	17—19
9.	एक जिला एक पर्यटन स्थल—देलवाड़ा मंदिर	20—23
10.	एक जिला एक खेल—तीरंदाजी	24—26
11.	एक जिला एक उत्पाद— मार्बल	27—33

# पंच गौरव कार्यक्रम

## राजस्थान सरकार

### 1. कार्यक्रम की प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियां हैं। इस कारण यहां अलग—अलग प्रकार की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतारी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए पंच गौरव के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गये हैं।

पंच गौरव कार्यक्रम वर्ष 2024 में सिरोही जिले में एक जिला एक उत्पाद—मार्बल, एक जिला एक उपज—सौफ, एक जिला एक वनस्पति प्रजाति—महुआ, एक जिला एक पर्यटन स्थल—देलवाड़ा मंदिर, एक जिला एक खेल—तीरंदाजी को चिह्नित किया गया है।

## 2. कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक पारिस्थितिकी, ऐतिहासिक धरोहरीकरण तथा क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना तथा उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिले में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिले से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वरक्ष्य प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना तथा इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- जिले में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

### 3. कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना

#### (अ) नोडल विभाग

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग, आयोजना विभाग होगा। राज्य स्तर पर एक जिला—एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला—एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला—एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला—एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात विभाग नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेंगे।

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार राज्य स्तरीय समिति का गठन किया जाएगा—

क्र.सं.	अधिकारी	पद
1.	मुख्य सचिव	अध्यक्ष
2.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/सचिव, उद्योग एवं वाणिज्य	सदस्य
3.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी	सदस्य
4.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/सचिव, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन	सदस्य
5.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव, खेल एवं युवा मामलात शासन	सदस्य
6.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव, पर्यटन, कला एवं संस्कृति शासन	सदस्य
7.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव /सचिव, सूचना एवं जन सम्पर्क	सदस्य
8.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/सचिव, वित्त अथवा उनके द्वारा नामित संयुक्त शासन सचिव स्तर के अधिकारी	सदस्य
9.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/सचिव, आयोजना	सदस्य
10.	अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/सचिव, सदस्य सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग	सदस्य
11.	निदेशक एवं संयुक्त सचिव, आर्थिक एवं सांख्यिकी	सदस्य

## (ब) समन्वय

प्रत्येक जिले में जिला कलेक्टर इन 5 विभागों के साथ समन्वय बनाते हुए इस कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करायेंगे। जिले का स्थानीय प्रशासन और विकास अधिकारी कार्यक्रम के कार्यान्वयन और प्रमाणिकता के मूल्यांकन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित मानदंडों के अनुरूप संचालित हों। पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया जाएगा:—

क्र.सं.	अधिकारी	पद
1.	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2.	जिला स्तरीय अधिकारी उद्योग, कृषि एवं उद्यानिकी, वन एवं पर्यावरण, खेल एवं युवा मामलात, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग	सदस्य
3.	जिला कलक्टर द्वारा नामित राजस्थान लेखा सेवा का अधिकारी	सदस्य
4.	संयुक्त / उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी जिला कार्यालय	सदस्य सचिव

जिला कलक्टर समिति की बैठक में आवश्यकतानुसार अन्य अधिकारियों को भी आमंत्रित कर सकेंगे।

#### 4. 'पंच गौरव' समिति सिरोही

क्र.सं.	अधिकारी	पद
1.	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2.	<ul style="list-style-type: none"> <li>● मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद, सिरोही</li> <li>● उप वन संरक्षक, वन विभाग, सिरोही</li> <li>● संयुक्त निदेशक, कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, सिरोही</li> <li>● महाप्रबन्धक, जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, सिरोही</li> <li>● जिला खेल एवं युवा मामलात अधिकारी, सिरोही</li> <li>● सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग, माउंट आबू, सिरोही</li> <li>● संयुक्त निदेशक, सूचना प्रोटोग्राफिकी विभाग, सिरोही</li> <li>● लेखा अधिकारी, जिला परिषद, सिरोही</li> </ul>	सदस्य
3.	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, सिरोही	सदस्य सचिव

#### 5. जिला स्तरीय समिति के कार्यः—

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले मे उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
5. पंच गौरव—जिला पुस्तिका तैयार करना।

# सिरोही जिले के पंच गौरव

सौफ़

देलवाड़ा जैन  
मंदिर

मार्बल  
उत्पाद

तीरंदाजी

महुआ

## 1. एक जिला—एक उपज 'सौफ'

### 1. प्रस्तावना :

सिरोही जिले में सौफ उद्यानिकी की एक प्रमुख मसाला फसल है। सिरोही जिले में इसकी बुवाई खरीफ ऋतु में की जाती है। शुष्क एवं ठण्डा मौसम विशेषकर जनवरी से मार्च तक इसकी उपज व गुणवत्ता के लिये बहुत लाभकारी रहती है।

सौफ की उपयोगिता इसमें पाये जाने वाले खुशबूदार वाष्पशील तेल के कारण है जिस कारण इसका उपयोग अचार, सूप, चॉकलेट, माउथ फ्रेशनर के साथ औषधीय गुण में उपयोगी होने के कारण इसकी महत्ता और बढ़ जाती है।

सिरोही जिले में इसकी बुवाई रोपण विधि से करने के कारण व जिले की जलवायु अनुकूल होने के कारण सौफ की गुणवत्ता बाकी जिलों से उत्तम रहती है।

### 2. फसल उपयोगिता :

सौफ का उपयोग मसाला के रूप में करने के साथ साथ औषधीय उपयोग तथा माउथ फ्रेशनर के रूप में किया जाता है।

### 3. फसल परिदृश्य :

सिरोही जिले में वर्तमान में लगभग 7527 हैक्टर क्षेत्रफल में सौफ की खेती की जा रही है, इसकी खेती के लिये 8 से 10 kg बीज प्रति हैक्टर छिड़काव विधि से बुवाई की जाती है, लेकिन सौफ की खेती रोपण विधि से भी की जाती है। रोपण विधि से बुवाई में 3 से 4 kg बीज प्रति हैक्टर की आवश्यकता होती है। रोप के लिए जून माह में 100 वर्ग मीटर क्षेत्र में इसकी नर्सरी लगाई जाती है जिसका 15 जुलाई से अगस्त माह में 40 से 50 cm की कतारों में रोपण किया जाता है।

सिरोही जिले में किसान मुख्यतया रोपण विधि से इसकी खेती करते हैं जिस कारण इसकी गुणवत्ता बेहतर होती है। सौफ की औसत उपज 10–12 किंवटल प्रति हैक्टर प्राप्त होती है तथा औसत बाजार भाव लगभग 12000 रुपये प्रति किंवटल है जिस कारण किसान

को अनुमानित 1.20 लाख प्रति हैक्टर की आय प्राप्त होती है इस प्रकार इस फसल से प्रति हैक्टर आय अन्य फसलों से ज्यादा है साथ ही इसकी मांग राजस्थान के साथ साथ अन्य पड़ोसी राज्य यथा गुजरात, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली सहित विदेशों में भी रहती है। जिसके कारण कृषकों की सामाजिक व आर्थिक आय में निश्चित रूप से सुधार होगा।

वर्तमान में सिरोही जिले में मुख्यतया आबुरोड, पिण्डवाडा व रेवदर तहसील में बहुतायत में सौंफ की खेती की जा रही है। सौंफ जिले में एक जिला एक फसल उत्पाद के तहत चयनित है।

#### 4. सौंफ की उपयोगिता

सौंफ एक अत्यधिक स्वास्थ्यवर्धक व औषधीय गुणों से भरपूर फसल है, इसके बीज पत्ती, तना और जड़ों का उपयोग औषधीय रूप में किया जाता है। इसके साथ ही इसमें पाये जाने वाले सुगन्धित तेल के कारण इसका उपयोग सौन्दर्यवर्धक उत्पाद में किया जाता है।

स्थानीय बाजार में प्रसंस्करण उपरान्त प्राप्त सौंफ उप उत्पाद की मांग होने पर प्रसंस्करण ईकाई की स्थापना की संभावनाएं हैं।

#### 5. सौंफ (एक जिला—एक फसल उत्पाद) कार्यक्रम के उद्देश्य :

- जिले के किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार करना।
- बुवाई हेतु उन्नत बीज / रोपण सामाग्री उपलब्ध करवाना।
- सौंफ उत्पादन में वृद्धि के साथ गुणवत्ता व विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करने के साथ साथ प्रसंस्करण को बढ़ावा देना।
- देश में स्थित सौंफ संबंधित विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में कृषकों एवं हितधारकों को भ्रमण करवाकर उच्च उत्पादन तकनीक एवं वैज्ञानिक तरीके से खेती से अवगत कराना और बढ़ावा देना।
- सौंफ उत्पादन की दृष्टि से आवश्यक आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- कृषि क्षेत्र में युवा कृषकों को सौंफ व प्रसंस्करण खेती की तरफ रुझान में बढ़ावा देकर खेती से विमुख हो रहे नवयुवकों का पलायन रोकना।

## 6. कार्यक्रम क्रियान्वयन :

एक जिला एक फसल उत्पाद – जिले के उद्यान विभाग द्वारा सहायक कृषि अधिकारी एवं कृषि पर्यवेक्षक के माध्यम से इसकी खेती का सफल क्रियान्वयन करवाया जायेगा। साथ ही अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार भी किया जायेगा। बुवाई हेतु बीज/पौध की उपलब्धता सुनिश्चित करवायी जायेगी ताकि कृषकों को गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री मिल सकें। साथ ही हितधारकों को सौफ के मूल्य संवर्द्धन एवं प्रसंस्करण हेतु प्रोत्साहित किया जावेगा, जिससे जिले के किसानों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।



## सिरोही-आबूरोड भास्कर 22-02-2025

दैनिक भास्कर

पाठा • जाला० • राजाठा०

### खेती बाड़ी • केवीके में बीजीय मसाला फसलों की उन्नत उत्पादन तकनीकों पर विशेषज्ञों ने दिया प्रशिक्षण उपज की ग्रेडिंग, प्रोसेसिंग कर बेचेंगे तभी उचित दाम

मसालान्दू | सिरोही

कृषि अनुसंधान केंद्र मंडो के तत्वावधान में केंद्र पर शुक्रवार की बीजीय मसाला फसलों की उन्नत उत्पादन तकनीकों पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र सिरोही पर आयोजित किया गया। बोधारा चौकरी कृषि अनुसंधान केंद्र मंडो के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. परमेश्वर महारा मुख्य अधिकारी के स्वर्ग में मौजूद रहे।

उन्होंने सिरोही जिले में बीजीय मसाला फसलों की महत्वपूर्णता की जानकारी दी। उन्होंने बीजीय मसाला फसलों के बुढ़ाई से लेकर कर्टर्ट तक के प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। उपज को साधा बाजार में न बेचनकर प्रोसेसिंग एवं फ्रेडिंग कर ही प्रयोग करने के लिए कहा।



बीमारियों के प्रबंधन के बारे में बारे में किसानों से चर्चा की। समाधान के बारे में बताया। केंद्र के बताया बीजोपचार के लिए संचालन करते हुए किसानों को प्रोत्साहन कर्त्ता डॉ. हरी सिंह ने द्राष्टव्यकारी एवं कार्बोडाइम का बीजीय मसाला फसलों में आने अविद्ययों का घटनाकाल जापित किया। कार्बोडाइम में जिले भर से अवाद किया। कार्बोडाइम में जिले भर से अवाद किया। कार्बोडाइम में सुखील कुमार, आकर्ष कैज़ानिक डॉ. रविंद्र प्राप्त सिंह अनुसंधान अधिकारी ने किसानों को कार्बोडाइम में सुखील कुमार, आकर्ष कैज़ानिक डॉ. नीतम ने जैतवत ने सिरोही जिले में बीजीय सौफ व जीर की फसल में गोपनीय खींची। सुन्दर सिंह, नारायण सिंह, सौफ एवं जीर में लाने वाली मसाला फसल सौफ व जीर के परिवर्तन से होने वाले नुस्खान के शिशापाल व मंगल गोजूद थे।

आज तय होगा भारतीय किसान संघ का महामंत्री



मुंबई | भारतीय किसान संघ के अखिल मतदान होगा। दोनों पर्यों पर एक-एक भारतीय अधिवेशन में किसान समूह, आवेदन ही रह तो 22 फरवरी का आंदोलन पर चर्चा करते हुए दोपहर 3 बजे अध्यक्ष और महामंत्री कार्यकारिणी निर्वाचन पर मंथन किया जाएगा। अधिवेशन में गया। फहले दिन सुबह 11 बजे प्रदेश अध्यक्ष, प्रतंत कार्यकारिणी, उत्थान सत्र हुआ। मुख्य अधिकारी संघ कार्यकारिणी, जिला अध्यक्ष नीति आयोग के उपायकर्मी भी ने और जिले मंत्री शामिल हुए। संठन अधिवेशन का उद्घाटन किया। मंत्री हेमराज, प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण सिंह अखिल भारतीय अध्यक्ष और महामंत्री चौहान, तुलाराम सीधा, मण्डकर पर के लिए फहले दिन आवेदन लिए परिवर्त, जिन्हें सिंह चैटिंगली, दलारपाम गया। आवश्यकता पहुंची तो 22 फरवरी बटे, ओम सिंह भाटी, उत्तम सिंह को सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक राठोड़ आदि मौजूद रहे।









## 2. एक जिला एक वनस्पति 'महुआ'

सिरोही जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतारी कर प्रदेश में सर्वांगीण विकास हेतु एक जिला—एक वनस्पति के रूप में 'महुआ' वृक्ष के संरक्षण एवं संवर्धन को प्राथमिकता दी गई है।



### परिचय :—

महुआ (वानस्पतिक नाम : *Madhuca longifolia*) एक उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन का एक प्रमुख पेड़ है जो राजस्थान के सिरोही जिले के मैदानी क्षेत्रों व वनों में बहुतायत में मिलते हैं। चूँकि यह उष्णकटिबंधीय वृक्ष हैं अर्थात् कम पानी होने के बावजूद यह हल्की नमी होने पर भी तेजी से बड़ा हो जाता है। इसकी ऊँचाई 20 मीटर तक की हो सकती है। महुआ के लगभग सभी अंग न केवल बहु उपयोगी हैं बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पोषित एवं सुदृढ़ भी करते हैं। कल्प वृक्ष की भाँति यह वृक्ष और कोई नहीं बल्कि हमारे ग्रामीण परिवेश व वनों में पाया जाने वाला सदाबहार महुआ है जो विषम परिस्थितियों में भी जीवित रहता है। महुआ के फूल इसकी पत्तियाँ फूलने के पहले फागुन—चैत्र में झड़ जाती हैं। पत्तियों के झड़ने पर इसकी डालियों के सिरों पर कलियों के गुच्छे निकलने लगते हैं। कलियाँ बढ़ती जाती हैं और उनके खिलने पर कोश के आकार का सफेद फूल निकलता है जो खाने के काम में आता है और महुआ कहलाता है। महुए का फूल बीस—बाइस दिन तक लगातार टपकता है। महुआ के फल एवं बीज इसके फल (डोरमा) गुदायुक्त, स्वादिष्ट व मीठे होते हैं। फल के बीच में एक बीज होता है जिससे तेल निकलता है। महुआ के बीज स्वस्थ वसा (हैल्दी फैट) का अच्छा स्रोत हैं।

## **उपयोगः—**

महुआ के हर हिस्से में विभिन्न पोषक तत्व मौजूद हैं। गर्म क्षेत्रों में इसकी खेती इसके स्निग्ध (तैलीय) बीजों, फूलों और लकड़ी के लिये की जाती है। महुआ के बीज के तेल का प्रयोग खाने में एवम ईधन के रूप में किया जाता है। महुए का फूल, फल, बीज, छाल, पत्तियाँ सभी का आयुर्वेद में अनेक प्रकार से उपयोग किया जाता है। महुए के फूल को दाह, पित्त और बात का नाशक, हृदयरोग, अल्सर इत्यादि में किया जाता है।

## **महुआ का संरक्षण एवं संवर्धन :—**

शुष्क वातावरण में भी इसके बीज रोपण अथवा पथरीली जैसी पड़त भूमि में आसानी से उग जाते हैं। कलम विधि द्वारा अच्छी प्रजाति के कलम से भी इसके पौधे तैयार किये जाते हैं। बावजूद वर्तमान में इनकी स्थिति कोई खास अच्छी नहीं है। चालीस वर्ष पूर्व ये बहुतायत में पाये जाते थे। लेकिन बढ़ते अनियंत्रित शहरीकरण तथा वन क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण से इनकी संख्या कम हो रही है। दरअसल सड़कों के निर्माण के दौरान इनके सैकड़ों पेड़ अंधाधुंध काट दिये जाते हैं। कहीं ये प्रजाति खतरे में न पड़ जाये इसके लिये जरूरी है, इनके पेड़ वन क्षेत्रों, सड़कों के दोनों ओर व पड़त जमीनों पर वैज्ञानिक तरीके से अधिक-से-अधिक लगाने की जरूरत है। इससे न केवल वनों का पारिस्थितिकी तंत्र सुदृढ़ होगा बल्कि इसके विभिन्न घटकों में आपसी सन्तुलन भी बना रहेगा।

## **आमजन की सहभागिता :—**

जिले में राजकीय/गैर राजकीय संस्थाओं, स्काउट्स, गाईड्स, सामाजिक संगठनों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थाओं एवं आमजन व अन्य द्वारा उपलब्ध स्थानों पर पौधारोपण किया जाकर उनका संरक्षण किया जाएगा।

स्थानीय लोगों को महुआ वृक्ष के महत्व, इसके औषधीय उपयोगों और पर्यावरणीय स्थिरता में इसकी भूमिका के बारे में शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान आयोजित किये जाएंगे।

## **स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देना :—**

वन विभाग द्वारा आयोजित पर्यावरण दिवस, वन महोत्सव, हरियाली तीज जैसे हर कार्यक्रम में JFMc/SHG/VFPMC के द्वारा स्टॉल लगाए जाएंगे जिससे रोजगार के अवसर, महिला सशक्तीकरण, प्रयोज्य आय में वृद्धि होगी। JFMc/SHG/VFPMC को आयुर्वेदिक औषधीय तैयार करने हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा।

### **वृक्षारोपण कर मदर ट्री विकसित करना :-**

सिरोही जिले के आबूरोड एवं पिण्डवाडा क्षेत्र में महुआ के विकास हेतु मदर ट्री विकसित करने के लिए वृक्षारोपण के कार्य किये जायेगे ताकि महुआ के पौधों को मदर ट्री हेतु विकसित किया जा सके और वृक्ष के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा की जायेगी।

### **अपेक्षित परिणाम :-**

1. सिरोही जिले में महुआ वृक्षों की संख्या में वृद्धि।
2. औषधीय उत्पादों के विकास के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी।
3. जैव विविधता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य में सुधार।
4. आमजन में जागरूकता बढ़ाना और महिलाओं को सशक्त बनाना।

### 3. एक जिला—एक पर्यटन ‘देलवाड़ा मंदिर’

राजस्थान के एक मात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल आबू पर्वत में विश्व प्रसिद्ध देलवाड़ा जैन मन्दिर स्थित है, जो सुन्दर वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। इसका निर्माण वर्ष 1031 में विमलशाह द्वारा कराया गया। देलवाड़ा जैन मंदिरों में सफेद संगमरमर पर जटिल नक्काशी की गई है। इन मंदिरों में विमलशाही मंदिर सबसे पुराना है। इस मन्दिर का निर्माण विमलशाह के द्वारा जैन तीर्थकर ऋषभदेव की याद में सफेद मार्बल से अरावली हिल पर बनाया गया जो देलवाड़ा जैन मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। विमलशाही मंदिर, जैन धर्म के पहले तीर्थकर भगवान आदिनाथ को समर्पित है। यहां पर प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में धार्मिक/पर्यटक इसे देखने हेतु आते हैं। यहां पर आने वाले पर्यटकों के लिये पार्किंग, शैचालय, धर्मशाला, भोजनशाला आदि की समस्त सुविधा उपलब्ध है। इस मन्दिर की देखभाल सेठ श्री कल्याणजी परमानंद जी पेढ़ी, सिरोही ट्रस्ट के द्वारा पूर्ण रूप से की जाती है। यह मन्दिर इस ट्रस्ट के अधीन है। ये मंदिर जैन धर्म के लिए एक ऐतिहासिक एंव पौराणिक तीर्थस्थल के साथ—साथ पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है।









## 4. एक जिला—एक खेल 'तीरंदाजी'

### 1. प्रस्तावना

एक जिला एक खेल योजना के तहत सिरोही जिले में तीरंदाजी को खेल के रूप में चुना गया है। राजस्थान के जनजाति इलाकों में तीरंदाजी लोकप्रिय खेल है और सिरोही जिले में तीरंदाजी खेल की मजबूत परम्परा रही है।

सरकार इस खेल को बढ़ावा देकर स्थानीय युवाओं को राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में सहायता कर रही है।

### 2. तीरंदाजी को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासः—

- प्रशिक्षण सुविधाओं का विकास।
- जिले में तीरंदाजी केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं।
- विशेषज्ञ प्रशिक्षक की नियुक्ति की जा रही है।
- स्थानीय एवं राज्य स्तर पर प्रतियोगिताएँ की जा रही हैं।
- राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय अवसर खिलाड़ियों को प्राप्त हो रहे हैं।
- खिलाड़ियों को आर्थिक सहायता एवं प्रोत्साहन सरकार की ओर से दिया जा रहा है।

### 3. परिणाम और प्रभाव

- जिले के युवा अब खेल को एक केरियर विकल्प के रूप में देख रहे हैं।
- ग्रामीण एवं जनजाति क्षेत्र में तीरंदाजी की लोकप्रियता में बढ़ोतारी हो रही है।
- राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर भी सिरोही जिले के खिलाड़ियों का प्रदर्शन बेहतर हो रहा है।

सिरोही में तीरंदाजी को विशेष प्रोत्साहन देने में न केवल खेल, संस्कृति को बढ़ावा मिला है, बल्कि युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का अवसर भी मिल रहा है। सरकार एवं खेल संगठनों की मदद से सिरोही जल्द ही राजस्थान के प्रमुख तीरंदाजी हब में से एक बन सकता है।

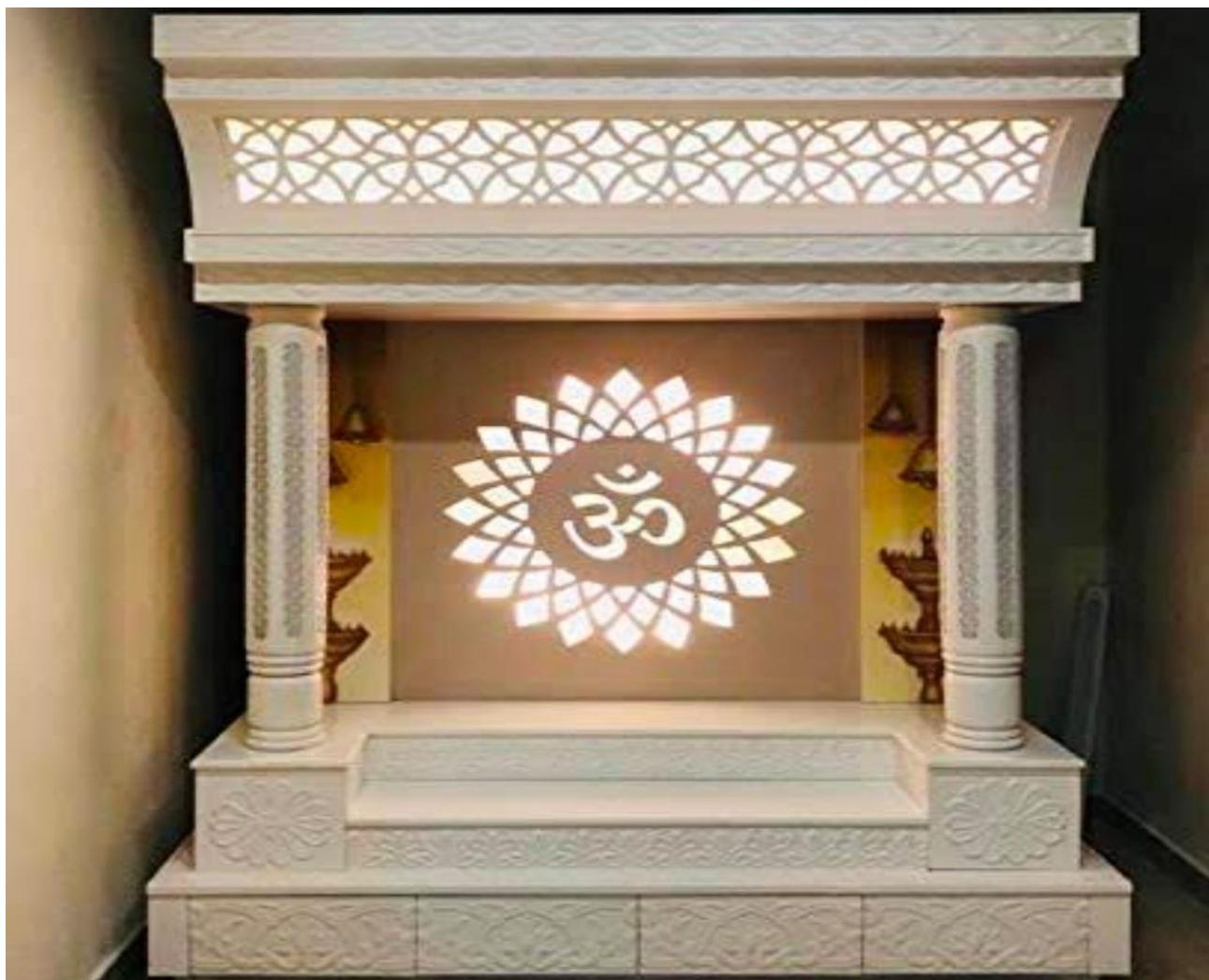




## 5. एक जिला—एक उत्पाद ‘मार्बल’

### परिचयः

सिरोही जिले से वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट के तहत मार्बल आर्टिकल (स्टोन हेडिक्राफ्ट) को शामिल किया गया है। जिले में मुख्य रूप से पिण्डवाडा एवं स्वरूपगंज में मार्बल खनन एवं आर्टिकल निर्माण का कार्य किया जाता है। पत्थर की घड़ाई का कार्य स्थानीय लोगों द्वारा मुख्य रूप से किया जाता है। सूक्ष्म नक्काशी का कार्य मुख्य रूप से हाथों से किया जाता है, किन्तु वर्तमान में CNC मशीन की सहायता से भी कलात्मक कार्य किया जा रहा है। घरों में इंटीरियर एवं एक्सटीरियर डिजायन में इन कलाकृतियों की बहुत मांग रहती है। स्टोन कलाकृतियां में पत्थर की मूर्तियों, मंदिर निर्माण के साथ विविध निर्मित की जाती हैं। नक्काशी के बाद इसमें रंग भरने और डिजाइन का कार्य किया जाता है।







### एक जिला एक उत्पाद—मार्बल आर्टिकल के प्रोत्साहन हेतु संचालित गतिविधियां

जिले में ODOP उत्पाद के प्रोत्साहन हेतु National ODOP award, 2024 के लिए आवेदन किया गया है। साथ ही भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय द्वारा संचालित क्लस्टर विकास कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरूपगंज में एक कॉमन फैसिलिटी सेंटर की स्थापना हेतु प्रस्ताव केंद्र सरकार को प्रेषित किया गया है।

## राजस्थान एक जिला एक उत्पाद नीति 2024

उद्देश्य:

- राज्य के जिलेवार विविध उत्पादों में स्थानीय निवेश, निर्यात तथा रोजगार सृजन करना और स्थानीय दस्तकारों, किसानों तथा उद्यमियों की आय में वृद्धि करना।
- योजना संचालन अवधि: 08 दिसम्बर, 2024 से 31 मार्च, 2029 तक।
- पात्र उद्यम :सम्बंधित जिले के ओडी ओ पी उद्यम।

योजना के मुख्य बिंदु एवं प्रदत्त वित्तीय सहायता :

- वित्तीय सहायता— ODOP निर्माताओं को 15 % से 25% तक मार्जिन मनी अनुदान, SC/ST/महिला उद्यमियों द्वारा संचालित ODOP इकाइयों को अधिकतम रु. 5 लाख तक की अतिरिक्त सहायता।
- तकनीकी उन्नयन— नवीन प्रोद्योगिकी के अधिग्रहण हेतु 50% तक की एक बारगी वित्तीय सहायता (अधिकतम रु. 5 लाख तक)।
- गुणवत्ता प्रमाणन— ISO/ZED प्रमाणन एवं बौद्धिक संपदा अधिकार की प्राप्ति हेतु 75% तक की एकबारगी वित्तीय सहायता (अधिकतम रु. 3 लाख तक)।

### (I) नवीन उद्योगों की स्थापना पर मार्जिन मनी सहायता हेतु योजना

देय सहायता:

1. नवीन सूक्ष्म उद्यम— परियोजना लागत का 25 प्रतिशत अथवा अधिकतम 15 लाख रुपये।
2. नवीन लघु उद्यम— परियोजना लागत का 15 प्रतिशत अथवा अधिकतम 20 लाख रुपये।
3. SC/ST/महिला/दिव्यांग/युवा उद्यमी रु 5 लाख तक का अतिरिक्त अनुदान।

पात्रता:

1. उद्यम रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट धारक हो।
2. नवीन उद्योगों हेतु संचालन अवधि में ऋण स्वीकृत एवं वितरण हुआ हो।
3. उद्यम द्वारा आवेदन संचालन अवधि के दौरान किया हो।
4. पात्र परियोजना लागत में भवन एवं शेड लागत 25% से अधिक न हो, ऋण में नवीन मशीनरी एवं उपकरण, विद्युत कनेक्शन चार्जस, फर्नीचर आदि हो तथा कार्यशील पूंजी कुल परियोजना लागत का 10% से अधिक नहीं हो।

आवेदन प्रक्रिया: योजना में निर्धारित आवेदन पत्र महाप्रबंधक जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र को वाणिज्यिक उत्पादन प्रारंभ होने के 6 माह के भीतर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

संलग्न दस्तावेज़:

- उद्यम रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट
- फर्म पंजीयन/कंपनी रजिस्ट्रेशन/इनकारपोरेशन सर्टिफिकेट
- बोर्ड रेजोल्यूशन/पॉवर ऑफ अटॉर्नी
- राजस्थान ODOP उद्यम पंजीयन
- प्रोजेक्ट रिपोर्ट बैंक सत्यापित
- ऋण स्वीकृति पत्र एवं वितरण दस्तावेज
- SC/ST/महिला/दिव्यांग/युवा उद्यमी प्रमाण पत्र
- भुगतान के प्रमाण
- प्रथम विक्रय बिल
- मार्जिन मनी दावे का बैंक प्रमाण पत्र
- व्यय विवरणों का सी ए सर्टिफिकेट
- अन्य प्रासंगिक दस्तावेज

आवेदन अनुमोदन : DLTFC द्वारा

परिलाभ वितरण : अनुमोदन प्राप्ति के बाद बैंक के ट्रांजिट खाते में 2 वर्ष तक लिंक करना और बाद में समायोजन करना।

## सिरोही जिले के महत्वपूर्ण मार्बल स्टोन हेंडीक्राफ्ट निर्माताओं की सूची:-

Sr. NO.	Name of Manufacturer	Company/firm name	Contact no.	District	Town
1	Subhash Kumar	Maa Kali Handicrafts	9413657482	Sirohi	Pindwara
2	Vaibhav Sethi	Ridhhi siddhi Exports	7728998800	Sirohi	Aburoad
3	Anshu Vashishth	Anshu marble & Mineral	9413373310	Sirohi	Swaroopganj
4	Mithalal	Ambika stone art	9460072817	Sirohi	Swaroopganj
5	Ram Chandra Banjara	Swagat Handicrafts	9829059187	Sirohi	Swaroopganj
6	Narendra Mehta	Sirohi Marble Article	9887682600	Sirohi	Pindwara
7	Kiran Trivedi	Trivedi Corp. pvt ltd	9571830333	Sirohi	Aburoad
8	Varun Trivedi	Trivedi marbles	9414152344	Sirohi	Aburoad
9	Deepak kumar	JK marble Handicrafts	9414545470	Sirohi	Pindwara
10	Amritlal Lohar	Mahaveer stone	9414206468	Sirohi	Pindwara



